3. 'तुलसीदास समन्वयवादी कवि के रुप में विख्यात हैं' उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

तुलसीदास का साहित्यिक अवदान स्पष्ट कीजिए। (15)

4. 'रामचरितमानस, में तुलसी केवल कवि रुप में ही नहीं, उपदेशक के रुप में भी सामने आते हैं।' इस कथन के आलोक में तुलसीदास की सामाजिक चेतना पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

अथवा

तुलसीदास के काव्य में भारतीय सौंदर्य बोध का स्वरुप स्पष्ट कीजिए। (15)

5. 'विनय-पत्रिका में अनुभूति और अभिव्यक्ति का अद्भुत समन्वय है' इस कथन के आधार पर तुलसीदास की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

अथवा

तुलसीदास की भक्ति-भावना की विशेषताएं बताएं। (15)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 10050 **K**

Unique Paper Code : 2053100016

Name of the Paper : तुलसीदास

Name of the Course : **B.A. (HONS.) HINDI – DSE**

Semester : VII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) मन क्रम बचन जोई। दसरथ अजिर प्रभु सोई।।
भोजन करत बोल जब राजा। नहिं आवत तजि बाल समाजा।
कोसल्या जब बोलन जाई। ठुमकु ठुमकु प्रभु चलहिं पराई।
निगम नेति सिव अंत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा।
धूरस धूरि भरें तनु आए। भूपति बिहसि गोद बैठाए।।

दो० - भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाइ।
भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ।।

अथवा

जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी।।
बिद्या बिनय निपुन गुन सीला। खेलहिं खेल सकल नृपलीला।।
करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा।।
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई। थकित होहिं सब लोग लुगाई।।
दो० - कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल।
प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहूँ राम कृपाल।।

(ख) पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह, बिचार।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार।।
मसक समान रूप कपि धरी।
लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी।।
नाम लंकिनी एक निसिचरी।
सो कह चलेसि मोहि निंदरी।।

अथवा

तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम।।
सुनहु पवनसुत रहनि हमारी।
जिमि दसनन्हि महूँ जीभ बिचारी।।
तात कबहूँ मोहि जानि अनाथा।
करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा।।

(ग) यह बिनती रघुबीर गुसाई।
और आस-बिस्वास-भरोसो, हरो जीव-जड़ताई।।
चहौं न सुगति, सुमति, संपति कछू, रिधि-सिधि बिपुल बड़ाई।
हेतु-रहित अनुराग राम-पद बढ़े अनुदिन अधिकाई।।
कुटिल करम लै जाहिं मोहिं जहँ जहँ अपनी बरिआई।
तहँ तहँ जनि छिन छोह छाँड़ियो, कमठ-अंडकी नाईं।।
या जगमें जहँ लगि या तनुकी प्रीति प्रतीति सगाई।
ते सब तुलसिदास प्रभु ही सों होहिं सिमिटि इक ठाईं।।

अथवा

कहु केहि कहिय कृपानिधे ! भव-जनित बिपति अति।
इंद्रिय सकल बिकल सदा, निज निज सुभाउ रति।।
जे सुख-संपति, सरग-नरक संतत सँग लागी।
हरि ! परिहरि सोइ जतन करत मन मोर अभागी।।
मैं अति दीन, दयालु देव सुनि मन अनुरागे।
जो न द्रवहु रघुबीर धीर, दुख काहे न लागे।।
जद्यपि मैं अपराध-भवन, दुख-समन मुरारे।
तुलसिदास कहाँ आस यहै बहु पतित उधारे।।

2. भक्ति आंदोलन का स्वरुप स्पष्ट करते हुए उसमें तुलसीदास का स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा

राम भक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताएं सविस्तार लिखिए। (15)